E-ISSN: 3048-6041 | Volume-1, Issue-12 | December 2024

आसियान और भारत : समकालीन गतिशीलता और विकास

मनीषा कुमारी
एम०ए०, एम०फिल्०, नेट
राजनीति शास्त्र विभाग
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश

भारत और आसियान के बीच पहले से ही स्थापित आपसी सहयोग ने हमेशा ही नए अवसर प्रदान किए हैं, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह बात इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत ने द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद आसियान के साथ अपने संबंधों को प्राथमिकता दी और उन्हें सुदृढ करना शुरू किया। दोनों पक्षों के लिए आर्थिक संबंधों को आगे बढाना एक प्रमुख एजेंडा रहा।

भारत की "लुक ईस्ट" नीति के तहत आसियान देशों की आर्थिक प्रगति ने इस क्षेत्रीय भागीदारी को मजबूती प्रदान की। 1992 में, भारत क्षेत्रीय भागीदार बना और 1995 में पूर्ण संवाद भागीदार, जिसमें सुरक्षा और राजनीतिक सहयोग के पहलू भी शामिल थे। भारत ने व्यापक आर्थिक सहयोग को सक्रिय करने के लिए 8 अक्टूबर 2003 को आसियान के साथ एक रूपरेखा समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते ने एक व्यापक व्यापारिक कार्यक्रम (सीईपी) का मार्ग प्रशस्त किया।

13 अगस्त 2009 को बैंकॉक में आयोजित बैठक के दौरान, आसियान के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता 1 जनवरी 2010 से प्रभावी हुआ, जिसने भारत और आसियान के बीच वस्तुओं के व्यापार को प्रोत्साहित किया। इसके बाद, 9 सितंबर 2014 को, भारत ने आधिकारिक रूप से सेवा व्यापार और निवेश व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस कदम ने भारत और आसियान के बीच निवेश और मानव सशक्तिकरण के लिए नए मार्ग खोले।

मुख्य शब्दः गतिशीलता, एजेण्डा, हस्ताक्षर, विनिमय, परिदृश्य, प्रभुत्व, द्विपक्षीय, कनैक्टिविटी, डिजीटलीकरण, इण्डोपेसिफिक, संकल्प

भूमिका

दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों के संगठन द्वारा आयोजित जिसमें दक्षिण–पूर्वी एशिया देशों के आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक क्षेत्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीयों मुद्दों की चर्चा। यह शिखर सम्मेलन अगस्त 1967 में पाँच देशों द्वारा गठित की गयी एक बैठक है। आर्थिक, सामरिक और सांस्कृतिक नजरिये से भारत का आसियान देशों के साथ सम्बन्ध काफी महत्वपूर्ण रहा है। 1992 में भारत, आसियान देशों का

क्षेत्रीय स्तर पर साझेदार बन जाने के बाद वर्ष 1996 से ही आसियान शिखर सम्मेलनों में शिरकत करता रहा है।

यह दक्षिण–पूर्वी एशियाई देशों का एक ऐसा संगठन है जो एशिया प्रशांत के उपनिवेशी राष्ट्रों के बढ़ते तनाव के बीच राजनीतिक और सामाजिक स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया था। इसका आदर्श वाक्य 'वन वीजन, वन आइडेंटिटी, वन कम्यूनिटी' है। दोनों पक्षों के क्षेत्र में भविष्य के सहयोग के लिए भारत–आसियान 'डिजीटल कार्य योजना–2022' को अन्तिम रूप दिया गया। आसियान वीजन 2020 को अपनाया गया।

हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में बहुआयामी विकास और हस्तक्षेप की पृष्ठभूमि में पिछले कुछ दशकों से भारतीय विदेश नीति में काफी परिवर्तन आए है। 1990 के दशक में 'लुक ईस्ट पॉलिसी' 1991 में प्रधानमन्त्री पी०वी० नरसिम्हा राव द्वारा शुरू की गई। यह नीति दक्षिण–पूर्वी एशिया के देशों के साथ व्यापक आर्थिक और सामरिक सम्बन्धों को विकसित करने की दिशा में एक प्रयास था ताकि एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत किया जा सके और चीन जनवादी गणराज्य के महत्वपूर्ण प्रभाव का मुकाबला किया जा सके।

भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' नरेन्द्र मोदी द्वारा 2014 में 12वें आसियान–भारत शिखर सम्मेलन में शुरू की गई जो कि 'लुक ईस्ट पॉलिसी' का उत्तराधिकारी बन गई। इस पॉलिसी का उद्देश्य आर्थिक सहयोग के साथ–साथ कनेक्टिविटी, व्यापार और सांस्कृतिक सम्बन्धों को विकसित करना और इस प्रकार उत्तर–पूर्वी क्षेत्र के आर्थिक विकास को बढ़ाना जिसे दक्षिण–पूर्वी एशिया का प्रवेश द्वार माना जाता है। इस नीति का उद्देश्य दक्षिण–चीन सागर में चीन के प्रभुत्व और हिन्द महासागर क्षेत्र में इसके बढ़ते प्रभाव के कारण बदलते भू–राजनीतिक परिदृश्य से निपटने के लिए स्थापित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य ही राजनीतिक एवम् उच्च रणनीतिक दृष्टिकोण है। चीन से निपटने के लिए आस्ट्रेलिया, वियतनाम, मलेशिया, जापान, दक्षिण कोरिया के साथ सम्बन्धों की रणनीतिक साझेदारी में सुधार किया गया है। पूर्वोत्तर क्षेत्र की उन्नति पर काफी ध्यान दिया जा रहा है। जापान कई परियोजनाओं की पेशकश कर भारत की सहायता कर रहा है।

आसियान में चीन की भूमिका और भारत

चीन ने अपने हित को ध्यान में रखते हुए अपने आर्थिक महत्व को समझते हुए आसियान देशों में अपनी पैठ जमाने के लिए काफी पूँजी लगाई है। चीन ने 'वीन बेल्ट, वन रोड़' वाले प्रयास में आसियान के अधिक से अधिक देशों को बनाए रखने में इच्छुक है। चीन के बढ़ते हुए प्रभुत्व को देखते हुए आसियान देश भी परेशान हैं और वे भारत को इसके प्रतिकार के रूप में देखते हैं। भारत की सहिष्णुतापूर्ण नीति ने इन देशों को काफी प्रभावित किया है। वहीं दूसरी और चीन आसियान के देशों के कुछ क्षेत्रों में अपना कब्जा जमाता जा रहा है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि चीन का भी आसियान देशों के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है और इन दिनों चीन को इन देशों के साथ मजबूत वाणिज्यिक

सम्बन्धों पर अधिक जोर देते देखा गया है। इसी कारण भारत और आसियान में निकटता बढ़ी है। तेजी के साथ प्रौद्योगिकीयों के समावेश से आम आदमी के सम्बन्ध का प्रभाव तेजी से बढ़ेगा और जैसा कि भारत और आसियान अपनी विशिष्टताओं को तलाशेंगे इससे उनकी लोकतान्त्रिक प्रणालियों को भी मजबूती मिलेगी और इनके राष्ट्रीय हित और आकांक्षाओं पर चीन के नकारात्मक प्रभाव का मुकाबला करने में मदद मिलेगी। आम लोगों के आपसी सम्पर्क के साथ–साथ प्रशिक्षण, कौशल निर्माण और सूचनाओं के आदान–प्रदान से अन्तर्राष्ट्रीय पहले पृष्ठभूमि के साथ भारत–आसियान साझेदारी के व्यापक आधार के लिए उनके प्रयासों का उल्लेख किया गया है। वे आज स्मार्ट ऊर्जा के साथ चीन की कुशाग्र ऊर्जा का मुकाबला करने का मार्ग तलाश रहे हैं।

अमेरिका के साथ भारत के मजबूत सम्बन्धों के मद्देनजर आसियान देश चीन की विशाल सैन्य शक्ति के विरुद्ध एक कवच जैसा कुछ चाहते है। सिंगापुर के 'ली कुआन यू' ने तो भविष्यवाणी कर दी है कि 2030 तक अमेरिका, चीन और भारत मिलकर इस क्षेत्र का भविष्य निश्चित कर देंगे। चीन की 'फूट डालो और राज करो' की नीति का अब जवाब देने का समय आ गया है।

इण्डो–पैसिफिक फ्रेमवर्क या आईपीईएफ अमेरिका द्वारा शुरू की गई एक पहल है जो इस क्षेत्र को वैश्विक आर्थिक विकास का इंजन बनाना चाहती है। कम्बोडिया, लाओस और म्यांमार को छोड़कर अन्य दक्षिण–पूर्वी एशियाई देश इसका हिस्सा है। हालॉकि भारत आसियान और क्वाड दोनों संगठनों से जुड़ा हुआ है, इसलिए भारत के लिए एक अवसर है, जब यह चीन के प्रभुत्व वाली आपूर्ति श्रृंखला से अलग एक स्थाई और विविध आपूर्ति श्रृंखला नेटवर्क की अगुवाई कर सके।

एकल रूप से अपने सदस्यों की तुलना में आसियान, एशिया–प्रशांत व्यापार, विनिर्माण और व्यापार का प्रमुख वैश्विक केन्द्र विश्व में सबसे तेजी से बढ़ते उपभोक्ता बाजारों में से एक है। दुनिया की 7वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था 2050 तक इसे चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में रैंक प्राप्त करने का अनुमान है। आसियान के पास भारत और चीन के बाद संसार की तीसरी सबसे बड़ी श्रम शक्ति है। भारत, आसियान का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। आसियान के साथ भारत का अनुमानित व्यापार भारत के कुल व्यापार का लगभग 10.6 प्रतिशत है। भारत का कुल निर्यात आसियान से लगभग 11.28 प्रतिशत है। भारत और आसियान देशों के निजी क्षेत्र के प्रमुख उद्यमियों को एक मंच पर लाने के लिए वर्ष 2003 में 'आसियान–इण्डियन बिजनेस काउंसिल (AIBC) की स्थापना की गई।

भारत–आसियान के समक्ष चुनौतियाँ

चूँकि कई भू–राजनीतिक चुनौतियाँ मौजूद हैं जो सुचारू भारत–आसियान आपसी सम्बन्धों को अवरुद्ध करती है –

- **हिन्द–प्रशान्त प्रतिद्वन्द्विता :** काफी लम्बे समय से चीन को आर्थिक भागीदार और अमेरिका को सुरक्षा गारंटर के रूप में देखना आसियान सन्तुलन के केन्द्र में रहा है। लेकिन वर्तमान समय में संतुलन बिगड़ रहा है और रूस–यूक्रेन युद्ध ने इस तनाव को ज्यादा बढ़ा दिया है। हिन्द प्रशांत

क्षेत्र में प्रमुख शक्तियों की प्रतिद्वन्द्वता के तेज होने से यहाँ की सुरक्षा एवम् शान्ति को खतरा पहुँच रहा है।

- **प्रादेशिक विवाद :** आसियान सदस्य देश लम्बे समय से इच्छुक शक्तियों के साथ क्षेत्रीय विवादों में उलझे हुए हैं। जैसे कि दक्षिण–चीन सागर में चीन के दावों के विरुद्ध ब्रुनेई, मलेशिया, वियतनाम और फिलीपिंस के दावे भी मजबूत हैं।
- भारत–आसियान देशों के साथ विभिन्न द्विपक्षीय सौदों को अभी तक अन्तिम रुप नहीं दिया गया है जिससे आर्थिक सम्बन्धों के विभिन्न पहलुओं में बाधा बनी हुई है।
- कलादान मल्टीमॉडल परियोजना जैसी कनैक्टिविटी परियोजना अभी तक पूरी नहीं हो पाई है। इसके विपरित चीन का 'वन बेल्ट, वन रोड़ इनिशियटिव' आसियान देशों में अपना प्रभाव फैला रहा है।

असमान अर्थव्यवस्था

- **आगे की राह :** भारत की 'एक्ट–ईस्ट पॉलिसी' आसियान के सम्बन्ध में कैसे सफल होती है और भारत आसियान सम्बन्धों में चुनौतियों पर कैसे काबू पाती है ? इस सम्बन्ध में कुछ किए गए प्रयास :

भारत–आसियान के बीच सहयोग के क्षेत्र

- **वित्तीय सहायता :** भारत–आसियान–भारत सहयोग कोष और आसियान–भारत ग्रीन फंड आदि के तहत भारत आसियान देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
- **शान्ति और सुरक्षा :** भारत–आसियान दोनों के ही शान्ति एवम् सुरक्षा के मामलें में एक जैसे ही हित हैं। दोनों पक्षों ने हिंद प्रशांत क्षेत्र में शान्ति, स्थिरता, समुद्री सुरक्षा और उड़ान भरने की स्वतन्त्रता एवम् उसको बढ़ावा देने की पुष्टि की है।
- **सम्पर्क सम्बन्धी परियोजना :** भारत आपसी सम्पर्क को बढ़ाने के लिए भारत– म्यांमार–थाइलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान मल्टीमॉडल परियोजना को कार्यान्वित कर रहा है।
- भारत और आसियान ने कम्बोडिया में आयोजित 19वें आसियान–भारत शिखर सम्मेलन में एक व्यापक रणनीतिक भागीदारी स्थापित कर अपने सम्बन्धों को एक नई ऊर्जा प्रदान की है।
- **एक्ट ईस्ट पॉलिसी का सफल क्रियान्वयन :** इस पॉलिसी का यदि सही दिशा में एवम् आपसी पारस्परिक सहयोग से क्रियान्वयन किया जाए तो आसियान और भारत दोनों को चुनौतियों से निपटने में सहायता मिलेगी। कृषि शिक्षा, डिजीटलीकरण, फार्मास्यूटिकल्स एवम् हरित विकास के क्षेत्र में यह पॉलिसी काफी सहायक सिद्ध होगी।

- **क्षेत्रीय पर्यटन :** चूँकि भारत और आसियान देशों के बीच पहले से ही सांस्कृतिक सम्बन्ध रहे हैं, इसलिए इनको क्षेत्रीय पर्यटन को भी बढ़ावा देना चाहिए ताकि लोगों का आपसी सम्पर्क बढ़े।
- **हिंद प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षात्मक प्रयास :** हिंद प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा आसियान एवम् भारत दोनों के लिए ही बहुत जरूरी है। दोनों पक्षों को ही समुद्री संसाधनों का सही दिशा में उपयोग करने एवम् संरक्षित करने की जरूरत है। इसके साथ ही आसियान को दक्षिण–चीन सागर क्षेत्र में मौजूद विवादों को हल करने के लिए संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून अभिसमय के सिद्धान्तों पर बल देना चाहिए।
- **जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने में सहयोग :** जलवायु परिवर्तन की चुनौति का सामना करने के लिए भारत और आसियान दोनों ही काफी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। दोनों पक्ष समुद्री प्रदूषण के मुद्दे पर सहयोग करते हैं और ईईओ का संचालन करते हैं। दोनों पक्ष नवीकरणीय ऊर्जा एवम् सौर तथा पवन ऊर्जा विकास पर सहयोग कर सकते हैं। यह कार्बन उत्सर्जन एवम् जीवाश्म ईंधन पर उनकी निर्भरता को कम करने में मदद कर सकते हैं।
- आसियान भारत की एक्ट ईस्ट नीति और इण्डो पेसिफिक क्षेत्र के लिए काफी महत्वपूर्ण है। चीन इण्डो–पेसिफिक क्षेत्र में अपनी आक्रामक नीतियों से आसियान देशों को आंतकित करता है। इसलिए भारत और आसियान दोनों ही आपसी सहयोग से हिंसक उग्रवाद, अन्तर्राष्ट्रीय अपराध एवम् आतंकवाद को रोकने के लिए एक–दूसरे का समर्थन करते हैं।

4 नवमबर 2019 को 14वें पूर्व एशिया शिखर सम्मेलन में पीए नरेन्द्र मोदी द्वारा घोषित आईपीओआई में एक सुरक्षित स्थिर समुद्री क्षेत्र सुनिश्चित करने के लिए इच्छुक राष्ट्रों के बीच एक सहयोगात्मक और सहयोगात्मक संरचना बनाने का प्रस्ताव था। आईपीओआई और एओआईपी के बीच तालमेल, जिसमें समुद्री संसाधनों और मुक्त व्यापार के सतत् उपयोग के लिए साझेदारी बनाने पर जोर दिया गया है, सहयोग के दायरे में वृद्धि करेगा जो महामारी के बाद आर्थिक सुधार में महत्वपूर्ण साबित होगा।

2021–25 के लिए भारत आसियान पीओए में व्यापार से लेकर समुद्री सुरक्षा तक के क्षेत्रों में अधिक सहयोग की परिकल्पना की गई है। इसके अलावा तेजी से एवम् बेहतर सुधार करने एवम् टिकाऊ विकास को बढ़ावा देने के लिए ये काफी महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने इण्डोनेशिया की राजधानी जकार्ता में हुए 20वें शिखर सम्मेलन में कहा कि ''आसियान भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' का केन्द्रीय स्तम्भ है। भारत की इण्डो–पैसिफिक पहल में भी आसियान का प्रमुख स्थान है। वैश्विक अनिश्चितताओं के माहौल में भी हर क्षेत्र में हमारे आपसी सहयोग में लगातार प्रगति हो रही है। उन्होंने कहा ''वैश्विक विकास में आसियान की अहम् भूमिका है।

21वीं सदी एशिया की सदी है। मुझे विश्वास है कि सम्मेलन में भारत–आसियान के भावी भविष्य के लिए नए संकल्प लिए जाएंगे।''

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि दक्षिण–पूर्व एशिया वास्तव में 21वीं सदी के विश्व के आर्थिक और भू–राजनीतिक आकर्षण के केन्द्र के रूप में उभरा है। आसियान की एकता और केन्द्रियता इस क्षेत्र में विकसित हो रही संरचना का महत्वपूर्ण स्तम्भ है। भू–राजनीतिक बदलावों ने क्षेत्र की सुरक्षा और विकास सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने के महत्व को रेखांकित किया है। भारत को भी इस क्षेत्र में अपने स्थायित्व को बढ़ाने के लिए आसियान क्षेत्रों के साथ व्यापार और आपसी सम्पर्क बढ़ाने की आवश्यकता है।

वैश्विक स्तर पर यह स्पष्ट है कि भारत–चीन के बाद विश्व की दूसरी सर्वाधिक जनसंख्या वाला एक विकासशील देश है। अतः भारत विकसित देशों तथा अन्य वैश्विक आर्थिक ब्लॉकों का मानना सत्य है कि भारत एक उभरता हुआ एवम् बड़ा बाजार है। इस परिस्थिति में विश्व की कोई भी आर्थिक शक्ति भारतीय बाजार की अनदेखी नहीं कर सकती है। आसियान भी भारत के निरंतर आर्थिक विकास से प्रभावित रहा है। आसियान का भी मानना है कि भारत, एशिया में चीन और जापान जैसे आर्थिक रूप से सक्षम देशों के बाद तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर देश है। अतः भारत के साथ द्विपक्षीय आर्थिक सम्बन्धों को मजबूत बनाने की इच्छा आसियान देशों के मन में उत्पन्न होना स्वाभाविक है। भारत–आसियान सम्बन्धों के एजेण्डे का भले ही व्यापक विस्तार हुआ हो लेकिन लुक ईस्ट पॉलिसी के प्रति आसियान की प्रतिक्रिया की प्रकृति सदस्य देशों की विविध वरीयताओं पर आश्रित रही है। जहाँ आसियान मंचों पर भारतीय भागीदारी की इण्डोनेशिया और सिंगापुर से अधिक समर्थन मिला, वहीं मलेशिया ने बहुपक्षी मंचों पर उसकी भागीदारी को समर्थन देने के मामले में सतर्कता बरती है। भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी के तहत भारत–आसियान सम्बन्धों को एक नई दिशा मिली है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- डॉ० एस०सी० सिंघल, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, 2005
- ए० अप्पोदो राय एवम् एम०एस० राजन, इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी एण्ड रिलेशन्स, नई दिल्ली, 1985
- अर्चना उपाध्याय, ''भारतीय विदेश नीति और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'', संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005
- दीपारंजन रॉय चौधरी, ''आसियान जल्द ही भारत के साथ एफटीए की समीक्षा पूरी कर सकता है'', इकनोमिक टाइम्स, 6 नवम्बर, 2019

- https://asean.org/wp-content/uploads/2021/10/70-Final-Chairmans_ statement-of-the-18th ASEAN-India Summit.pdf
- पंत एवम् जैन, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज, मेरठ, 2012–13
- डॉ० मथुरालाल शर्मा, प्रमुख देशों की विदेश नीतियाँ, कॉलेज बुक डिपो, 83, त्रिपलिया बाजार, जयपुर, 2009
- केन्टोरी एण्ड स्पीगल, इण्टरनेशनल पॉलिटिक्स ऑफ ए रीजन–ए कम्पेरेटिव एप्रोच, न्यू जर्सी, 2012
- जे०एन० दीक्षित, ''भारत की विदेश नीति और इनके पड़ोसी, ज्ञान पब्लिसिंग, नई दिल्ली, 2005
- अस्थाना, वंदना, इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी एण्ड सब–कोन्टिनेन्टल पॉलिटिक्स, कनिष्ट पब्लिशर्य, न्यू देहली, 2002
- Saikia, S.K. (2013), "India's Look East Policy : Opportunities and Challenges for North Eastern"
- डॉ० भगवतशरण उपाध्याय, ''भारत के पड़ोसी देश'', राजपाल एण्ड सन्स पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2014
- दीप चौहान, सरबजीत सिंह परमार और दुरै राजकुमारसम, ''भारत प्रशांत सहयोग' : AOIP और IPOI'', एआईसी वर्किंग पेपर, 2020
- https://asean.org
- https://navbharattimes.indiatimes.com
- https://www.orfonline.org/hindi/research/quad-and-arean-china-india
- https://www.icwa.in/show-content.php?long=2&level=3&ls_id=4201 &lid:3136